सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, नवम्बर-दिसम्बर, 2012

जगत का उद्धारकर्ता

लूका (2:34) - शमौन ने उन्हें आशीष देकर यीशु की माता मरियम से कहा, 'देख, यह बालक इस्राएल में बहुतों के पतन, व उत्थान का कारण और ऐसा चिन्ह होने के लिए ठहराया गया है जिसका विरोध किया जाएगा।'

यूसुफ और उसकी पत्नी मरियम को इन बातों से जो उसके विषय में बोलीं गई थी बड़ा अश्चर्य हुआ। एक के बाद एक घटना उस नन्हें शिशु के विषय में उजागर हों रहीं थी और एक नयी जिम्मेवारी का बोध भी करवा रही थीं। एक महान पुत्र एक बड़ी जिम्मेदारी होता है। माता-पिता आत्मिक तौर पर जागरूक और योग्य होने चाहिए। ऐसा मत सोचो कि ये माता-पिता अचानक संसार में बड़े विरले लोगों में से हो गए। उनके प्रशिक्षण में काफी ध्यान लगा था। ऐसे गुणों का

जगत का उद्धारकर्ता ... पृष्ठ ३ पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

STAR UTSAV

चैनल पर

*हर **शनिवार सुबह** 8:30 से 9:00 बजे*

क्रिसमस – यीशु मसीह का जन्म

क्रिसमस के लिए हम अपने दिलों को तैयार करें। पूरे मन से आराधना करने के लिए हम अपने दिलों को तालमेल में लाएँ। “अब मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हुई, तो उनके समागम से पूर्व ही वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई।“ (मत्ती 1:18) क्रिसमस की कहानी का परिचय हम यहाँ देखते है। मत्ती रचित सुसमाचार का पहला अध्याय यूसुफ की विशेषता पर केन्द्रित है, हाँलाकि यहाँ मरियम के बारे में भी जिक्र किया गया है। इस बारे में हम देखते हैं कि यूसुफ को कैसे तैयार किया गया और किस तरह वह अध्यात्मिक ऊँचाइयों पर उठता गया।

यूसुफ परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति था और उसका मन एक महान प्रकाशन के लिए तैयार किया गया था। मुझे पता नहीं कि परमेश्वर कितने समय से उसको तैयार कर रहे थे। यूसुफ की प्रारंभिक तैयारियों के बारे में हम कुछ जानकारी नहीं पाते। मगर इस नौजवान को देख मुझे ताज्जुब होता है। जब उसको पता चला कि उसकी मंगेतर गर्भवती है, उसको बहुत गहरा धक्का पहुँचा।

यूसुफ में हम एक सुन्दर चरित्र पाते है। वह एक बहुत बड़ी उलझन में था। वह अपने आप से शायद कहता होगा: “अब मैं क्या करूँ? कितनी बड़ी मुसीबत मुझ पर आ पड़ी है। ठीक है, मैं अपनी मंगनी को तोड़ता हूँ। और उसको छोड़ देता हूँ।“ मगर उस में परमेश्वर का प्रकाशन पाने की क्षमता थी।

आज दुनिया शक से भरी है। शादीशुदा आदमी-औरतें भी शक से भरे है। अविश्वास से भरा हृदय? आज यह नौजवानों का लक्षण बन गया है। वे अपवित्र जीवन से अपनी शुरुआत करते हैं जिस के कारण, शादी के बाद, उनके मन पर शक हावी रहता है। फिल्मों और उनके कामुक संभोगों को अपने मन को सिखाते है। इस कारण उनके वैवाहिक जीवन में सुख और आनंन्द नहीं है।

मगर युसुफ में स्वर्ग से तालमेल में रहने की क्षमता थी। वह परमेश्वर को सुन सकता था। आखिरकार यहीं तो धर्म है - परमेश्वर को सुनना। गायक-वृन्द के कुछ लोग क्रिसमस के लिए अपने गानों का अभ्यास करने और अपने दोस्तों के साथ हँसी मजाक करने में इतने व्यस्त होंगे कि परमेश्वर के लिए उनके पास समय नहीं है। मैं ये तो नहीं कहता कि आपको अभ्यास नहीं करना चाहिए। परमेश्वर की स्तुति

सही ताल मेल से करनी चाहिए। अगर आप बेसुर गाते हो तो आप परमेश्वर से माँगे की वह आप के गले को स्पर्श करें। मगर यह मत भूलना कि पहले जो आवश्यक है वह है परमेश्वर की वाणी को सुनना। कुछ लोगों में यह क्षमता बिलकुल नहीं है। इस कारण, उनके लिए क्रिसमस सिर्फ पेट तक ही सीमित है। वे परमेश्वर के साथ तालमेल में नहीं है। हम सब कई उलझनों और मुश्किल परिस्थितियों का सामना करनेवाले है। कई बार मुझे मर्गदर्शन के लिए परमेश्वर की ओर देखना पड़ता है। कई बार, उनका निर्देशन पाने के लिए मुझे बहुत समय प्रार्थना में बिताना पड़ता है। मगर यह सही नहीं है। हम परमेश्वर के इतने निकट रहें कि उनका निर्देश हमें नियमित रूप से मिलता रहे। तब हमारी जिन्दगियों में कुछ बारबाद नहीं होगा। अगर आपके पिताजी, परमेश्वर का भय मानने वाले व्यक्ति हैं और आपका यह अनुभव नहीं है तो आप अपने पिताजी का कहना माने। माता-पिता यह जान लें कि अपने बच्चों की अगुवाई करना एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। हम यह जरूर याद रखे कि हम कई दफा लोगों के बारे में गलत अनुमान लगाते हैं। परमेश्वर की चुनी हुई कुवारी मरियम के बारे में, यूसुफ गलत समझ रहा था। इस संसार के सब से महत्वपूर्ण जन्म को वह सिर्फ भौतिक स्तर पर ही अन्दाजा लगा रहा था।

आपके पारिवारिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए परमेश्वर का प्रकाशन पाना आवश्यक है। नहीं तो आप इस विशाल सागर में डूब जाओगे। परमेश्वर की महान योजना से बिछड़ने के, यूसुफ कितना निकट आया था। "अब मैं उससे कुछ ताल्लुक नहीं रखना चाहता।" वह अपने आप से कह रहा था। मगर परमेश्वर ने कहा, "ठहरो, तुम्हारा भय अनुचित है। यूसुफ, मरियम को अपनी पत्नी बनाने से मत डर।"

हम में से कईयों के बारे में कौन सी बात सच है। हम खच्चर की तरह हठी है। हम परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध लगातार लड़ते जा रहें है और कभी रुकते नहीं। परमेश्वर की इच्छा के विरोध में लड़ने का क्या प्रयोजन है? परमेश्वर के मन में आपके लिए उच्च योजना है। अगर आप, परमेश्वर के द्वारा अगुवाई पाने के लिए तैयार नहीं है, तो आपका जीवन आँसुओं से भर जायेगा। अगर आप, परमेश्वर से निर्देशन पाकर आगे बढ़ते हैं तो आप को कोई डर नहीं होगा। हम अपने निर्णयों में बहुत गलत हो सकते है। दुष्टता से भरे हृदय में शक बार-बार पैदा होता है। एक निर्मल लड़की से आप विवाह करते हो, फिर भी आप उस पर विश्वास नहीं कर पाते हो, तो इसका मतलब है कि आपने खुद एक बेईमान जीवन जिया है।

परमेश्वर के निर्देशन के प्रति यूसुफ की क्या प्रतिक्रिया रही? वह शादी करने में आगे बढ़ा और उससे शारिरिक संबंध तब तक नही बनाया जब तक वह पुत्र न जनी। अद्भुत! क्या यूसुफ जैसा चरित्र सिर्फ बाइबल में ही रहें? नहीं, हमारे बीच भी ऐसे आदमी हो। क्या परमेश्वर का प्रकाशन मुनष्यों तक पहुँचना बन्द हो गया है? नही, परमेश्वर चाहते है कि वह आप से बात करें। वह संपूर्ण सत्य में आपकी अगुवाई करना चाहते है। सारी उलझनों और डर से वे आपको मुक्त करना चाहते है। वह आपके घर में शान्ति लाना चाहते है।

यूसुफ की उलझन के लिए कोई मानवीय हल नहीं है। कोई भी उसको सही निर्णय लेने में मार्गदर्शन नही कर पाया होगा।प्रकाशन जरूरी था। प्रकाशन के बिना हर एक गुमराह है। "क्या आप परमेश्वर को अपने से बात करने दोगे और अपने शकी स्वभाव का अन्त करने दोगे?"

\- जोशुआ दानियल।

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

जगत का उद्धारकर्ता... पृष्ठ 1 से

घर अचानक ही बनाया नहीं जा सकता। उनकी इच्छाएँ और लक्ष्य स्वर्ग की ओर थे। उनकी जवानी का समय बड़ा अलग था।

ऐसे मत मानो कि यीशु के परिवार का माहौल ऐसा हो मानो एकाएक बना दिया गया हो। माता-पिता साधारण लोग थे। जीवन की उपलब्धि और प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि जवानी के दिनों में जीवन की कैसी नींव बनाई गई है। लापरवाही में जवानी बिताने के बाद, तुम एक आत्मिक घर नहीं बना सकते हो। मैं मरियम और यूसुफ की सादगी और महानता पर विस्मित होता हूँ। कितनी असीम, गौरवशाली और पवित्र कहानी है इस घर की। एक मसीह के लिए इस कहानी में महान खजाना उपलब्ध है।

यरूशलेम में एक व्यक्ति था जिसका नाम शमौन था। इससे पहले हम उसके बारे में नहीं सुनते। वह एक सन्त व्यक्ति रहा होगा। वह धर्मी और ईमानदार था। 400 साल से इस्राएल में कोई नबी नहीं हुआ था। वह व्यक्ति परमेश्वर के महान वरदान के पूरा होने की प्रतिक्षा में था। हरेक व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन को पढ़ता है और उसका मनन करता है, वह परमेश्वर के विचारों की झलक पाएगा। आत्मिक शक्ति की प्रगति दूसरों के विचारों को पढ़ने में सहायता करती है। प्रार्थना न केवल दूसरों को पढ़ने में हमारी सहायता करती है बल्कि परमेश्वर के विचारों को जानने में भी हमारी सहायता करती है। नबूवत कुछ ओर नहीं बल्कि परमेश्वर के विचारों को देखना है। जब तुम्हारा हृदय शुद्ध होता है और तुम इसे परमेश्वर के वचन से भरते हो, तुम परमेश्वर के साथ मिलकर भविष्य में देखोगे। तुम्हारे अंदर आत्मिक आर्कषण पैदा होगा, जो लोगों को तुम्हारी और खींचेगा। शमौन नन्हें यीशु को अपने हाथों में लेकर कितना खुश हुआ। मसीह जगत में उद्धारकर्ता के रूप में आया है। वह ऐसी ज्योति है जो गैरयहूदियों को प्रकाशन देती है। इस वृद्ध व्यक्ति ने उस दुख के समय की नबूवत (भविष्यवाणी) की, जिसका यीशु की माँ को सामना करना पड़ेगा। ऐसा प्रतीत होता है मानो शमौन को क्रूस (सूली) की वेदना स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी। साढ़े तीन वर्ष की गौरवशाली सेवकाई के बाद यीशु क्रूस पर लटकेगा। मुझे यह समझ में नहीं आता कि इस माँ ने यह कैसे सहा होगा।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन तुम्हें सही प्रकार की आत्मिक प्रगति देगा। एक ऐसी भी आत्मिक तरक्की है, जो हमारे मन में घमंड पैदी करती है। इसे सावधान रहो। ऐसी बात उनके साथ नही होती जो परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं। शमौन तो इस्राएल के छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहा था। हमें प्रार्थना करते हुए कलिसिया की सामर्थ बढ़ानी चाहिए। कलिसिया उपयोगी और सामर्थी बननी चाहिए। हमारी कलिसियाओं की सही प्रकार की प्रगति होनी चाहिए और सच्चे परमेश्वर के जन पैदा होने चाहिए। केवल अपने विषय में मत सोचो। सबसे पहले तुम्हें अपने आत्मिक जीवन को सुरक्षित करना चाहिए। तब तुम्हें इस बात की अपेक्षा चाहिए कि कलिसिया में परमेश्वर के महान कार्य हों। जब हम प्रचार करें, तो लोगों को दण्डवत होकर परमेश्वर के सामने गिरना चाहिए। लोग, परिवार और कलिसियाएँ परमेश्वर की ओर फिरनी चाहिए।

शमौन आत्मा के द्वारा ठीक उसी समय मंदिर में पहुँचा जब यीशु मंदिर में पहुँचे। इसी तरह से आत्मा अगुवाई करता है। आत्मिक जीवन एक विशेष जीवन है। संसार नबूवत करने वाले लोगों को देखने का भूखा है। जब तुम नबूवत करोगे तो लोग परमेश्वर की अराधना करेंगे। वे जान लेंगे कि परमेश्वर तुम्हारे द्वारा बोल रहे हैं। जब तुम आत्मिक जीवन में आगे बढ़ते हो और अपने प्रार्थना के जीवन में, परमेश्वर तुम्हें ऐसी सामर्थ देंगे कि लोग अपने पाप को स्वीकार करने लगेंगे जैसी ही वे तुम्हारे घर की और आ रहे होंगे। तुम आलौकिक शक्ति से भरे होंगे। शमौन परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण था। उसकी नबूवत द्वारा एक परिवार दृढ़ हुआ, जो उन घटनाओं को समझ सका, जो इतने अद्भुत रूप से उनके जीवन में इतनी जल्दी घट रहीं थीं। तुम्हारे आत्मिक जीवन के गुण का स्तर बहुत ऊँचा होना चाहिए।

- एन दानियल।

सत्य की परख

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।' (युहन्ना 3:16) "

तुम्हें केवल यही चाहिए

एक महिला लंदन में एक दिन अपनी एक मित्र को पेडींगटन स्टेशन पर विदा करने आई, जो शहर छोड़ कर जा रही थी। जब ट्रेन चली गई तो यह महिला अपने घर वापस लौटने लगी। उसने बस पकड़ी और कुछ ही क्षण में कंडक्टर ने आकर उससे किराया माँगा। उसे बड़ा अश्चर्य हुआ, जब उसने पाया कि उसका बटुआ खो गया है। कंडक्टर ने उसे उतर जाने को कहा।

वह एक गर्म सुबह थी। वह अपने घर से मीलों दूर थी। अब वह क्या करे? हाइड पार्क की ओर आकर वह एक बेंच पर बैठ गई। वह बड़ी अजीब परिस्थिति में थी, लेकिन - परमेश्वर वहाँ थे। वह उसे इसके विषय में बताएगी।

अपने थैले में से जब उसने नये नियम को निकाल कर खोला और पढ़ा - फिलीपियों (4:19) - मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित यीशु में है तुम्हारी प्रत्येक आवश्यकता पूरी करेगा।

उसकी 'ज़रूरत' उस समय केवल छह पैसे थी। उसने आँखे बन्द की और इस वचन के अनुसार वरदान माँगा, एकदम उसे इस बात का भरोसा हो गया कि उसकी ज़रूरत पूरी की जाऐगी। कैसे पूरी होगी, उसे पता नही था, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता - परमेश्वर जानते थे।

वह ज़मीन पर मिट्टी में अपने छाते से लिखने लगी। उसने यह शब्द लिखे - 'परमेश्वर प्रेम है।' वह जैसे ही 'है' शब्द को पूरा कर रही थी, अचानक उसके छाते की नोक ने एक छह पैसे का सिक्का पलटा। उसका मन ज़ोर से उछला। उसकी ज़रूरत पूरी की गई। उसने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर को धन्यवाद दिया। वह उठी और जल्दी से बस पकड़ने के लिए चली। जब कंडक्टर ने किराया माँगा, उसने उसे छह पैसे दिये। वह उस सिक्के को ध्यान से परखने लगा।

'यह खरा है।' महिला ने कहा, 'यह ज़मीन में गड़ा हुआ था। मैं अपना बटुआ खो बैठी थी और मुझे घर वापस पहुँचने के लिए छह पैसे की ज़रूरत थी। मैंने अपने स्वर्गीय पिता (परमेश्वर) से पैसा भेजने को कहा, और उन्होंने भेजा। मैं हाइड पार्क में छाते की नोक से मिट्टी में लिख रही थी। 'परमेश्वर प्रेम है' और मेरे छाता उस सिक्के से जा टकराया।'

कंडक्टर उसे अश्चर्य से देखने लगा, 'मेरी इच्छा है,' उसने कहा, 'परमेश्वर मुझे भी ऐसे ही जवाब दे।' लेकिन मैं अब वैसा नहीं हूँ, जैसा पहले था। मैं अब रविवार को कलिसिया नहीं जाता। मैं अपने कलिसिया में सामूहिक गायन दल में गाया था। मैं अब विवाहित हूँ और अब हम अपने छुट्टी वाले रविवार पार्क में बिताते हैं।

'ओह' महिला ने कहा, ' वापस परमेश्वर के पास ज़रूर आ, उसके साथ अपने संबंध को सही कर। परमेश्वर प्रेम है।'

और अधिक कहने का समय नहीं था। जब बस उस स्थान के निकट पहुँची, जहाँ उस महिला को उतरना था, वह उस कंडक्टर के पास से गुज़रते हुए फुसफुसाई और बोली, 'परमेश्वर के सामने पश्चाताप कर। मैं तेरे लिए प्रार्थना करूंगी।'

उसने अपने वादे को निभाया और प्रतिदिन उस व्यक्ति और उसकी पत्नी के लिए प्रार्थना करती रही।

एक सुबह, कुछ सप्ताह पश्चात, वह महिला किलबर्न स्थान पर बस से जा रही थी। उसने कंडक्टर की ओर देखे बिना उसके हाथ में किराया थमाया।

'माफ कीजिए, बहनजी,' उसने कहा, 'क्या आप ही वह महिला हैं जो मेरे लिए प्रार्थना कर रहीं थीं?'

एक ही क्षण में उसने उस व्यक्ति को पहचान लिया। 'हाँ', उसने जवाब दिया, 'मैं ही हूँ।'

'ओह', उसने कहा, 'मैं आपको देख कर खुश हुआ। मैं आपकी छह पैसे वाली कहानी को नहीं भूला था। अति उत्तम बात तो यह हुई, मैंने परमेश्वर के सामने पश्चाताप किया और अब मेरी पत्नी ने भी मन फिराया। हम अपने नन्हें लड़के को भी कलीसिया लेकर जाते हैं और हमनें उसे परमेश्वर को समर्पित कर दिया है।'

उस आदमी ने इतनी सच्ची खुशी से यह सारी बातें बताई कि इस महिला का मन परमेश्वर के प्रति आभार से भर गया।

- चुना गया।

पूर्वी देश की चरनी

ब्रिटिश 'जेफरी टी बुल', तिब्बत का मिश्नरी, ठंड का मारा, थका और भूखा था। वह उन साम्यवादियों द्वारा कैद किया हुआ था जिन्होंने 1949 में चीन पर काबू कर लिया था, उसका भविष्य बड़ा धुंधला जान पड़ रहा था। उसके बन्दी बनाने वाले दिन रात उसे बर्फ से जमें हुए पहाड़ों पर ले कर भाग रहे थे, जब तक की वह जीने की चाह से हार चुका था। एक देर दुपहरी, उसने लड़खड़ाते हुए एक गांव में प्रवेश किया

जहाँ उसे उपरी मंजिल पर ठहरने के लिए एक कमरा दिया, साफ सुथरा और कोयले की अंगीठी द्वारा गर्म किया हुआ।

थोड़ा सा खाना के बाद, उसे घोड़े चराने को नीचे भेजा। वहाँ बहुत ठंड और अंधेरा था। उसने बड़ी कठिनाई से एक लकड़ी के सहारे से गहन अंधेरे में रास्ता टटोला। उसके जूते गोबर और धरती पर बिखरे भूसे में पड़ रहे थे। जानवरों की दुर्गंध से उसे उबकाई आ रही थी। घोड़े भी थके हुए सांस भर रहे थे, पूंछ लटकी हुई थी, लेकिन मिश्नरी को किसी भी क्षण दुल्ती पड़ने का आसार नज़र आ रहा था। जैफरी, ठंड का मारा, थका हुआ, एकाकी और बिमार, उसे अपने ऊपर दया आने लगी।

'जब मैं अंधेरे में अपना रास्ता टटोल रहा था,' उसने बाद में लिखा, 'अचानक मेरे दिमाग में कौंधा। आज कौन-सा दिन है? मैंने एक क्षण के लिए सोचा। यात्रा के कारण मेरे दिमाग से सप्ताह के दिनों की गड़बड़ी हो गई थी। अचानक मुझे ध्यान आया! यह क्रिसमस की पूर्व संध्या है। मैं उस पूर्वी देश की चरनी में चुपचाप खड़ा हो गया। यह सोचते हुए कि मेरा उद्धारकर्ता (यीशु मसीह) ऐसे ही स्थान पर पैदा हुआ था। यह सोच कर कि वह स्वर्ग को छोड़ कर इस गंदी पूर्वी चरनी में आया और इस बात के सोचने के बाद कि वह मेरे लिए यहाँ आया, कुछ बाकी नहीं बचा था। लोग कैसे बच्चे के पालने और चरनी को खूबसूरत बना कर दर्शाते हैं, मानो इस सच्चाई को छिपाने की कोशिश कर रहे हों कि हमने उसके जन्म पर उसे इन जानवरों की दुर्गंध में छोड़ दिया हो और मृत्यु पर अपराधियों की शर्म का भागी बना दिया।'

'मैं अपने उस साफ और गर्म कमरे में वापस आया जो एक बंदी होते हुए भी मुझे उपलब्ध था, आभार और यीशु की अराधना में मैंने अपना सिर झुकाया।'
- चुना हुआ।

बूढ़ा वैरागी

'कोरी टेन बूम' एक बूढ़े वैरागी की इस कहानी को बहूदा सुनाया करती थी, जो हर क्रिसमस की पूर्व शाम को मठ में अपने भाइयों और पास के गाँव से आने वालों को क्रिसमस अराधना के समय गीत सुनाया करता था। उसका गाना बेसुरा होता था। लेकिन वह प्रभु यीशु से बेहद प्रेम करता था, इस कारण पूरा मन लगा कर गाया करता था। एक साल मठ के प्रबंधक ने कहा, 'मुझे माफ करना, भाई डॉन, इस क्रिसमस के अवसर पर हमें तुम्हारी आवश्यकता नहीं है। एक नया चेला आया है और उसकी आवाज़ बेहद मधुर है।'

उस आदमी ने बड़ी सुन्दरता से गाया और सभी खुश थे। लेकिन उस रात एक स्वर्गदूत वरिष्ठ वैरागी के पास आया और बोला, 'तुम लोगों ने क्रिसमस की पूर्व संध्या पर गीत क्यों नहीं गाया?'

वरिष्ठ वैरागी को बड़ा अश्चर्य हुआ, 'हमने एक बहुत ही मधुर गीत गाया,' उसने जवाब दिया, 'क्या तुमने सुना नहीं?'

स्वर्गदूत ने दुखी होते सिर हिलाया, 'वह तुम्हारे लिए प्रोत्साहन का कारण रहा होगा, लेकिन वह स्वर्ग में हमें सुनाई नहीं दिया।'

'देखा तुमने,' कोरी बोली, 'उस बूढ़े वेरागी की मोटी आवाज़ के साथ उसका प्रभु यीशु के साथ व्यक्तिगत नाता था, लेकिन वह युवा वैरागी केवल अपने लाभ के लिए गा रहा था, प्रभु के लिए नहीं।'
- चुना हुआ।

जीवन की भेंट

1910 के साल, क्रिसमस के त्यौहार के समय, देश में जिसका पुराना नाम चैकोस्लोवाकिया था, एक भयंकर माहामारी फैली। वह काली खाँसी की बिमारी (गले की जानलेवा बिमारी) थी और उसने वैलकी स्लावहोव नामक छोटे से गाँव में तबाही फैला दी थी। लगभग आधे गाँव में यह संक्रमण रोग फैल गया और इस बिमारी का शिकार अधिकतर दस साल की उम्र से कम के बच्चे थे। जैसे ही किसी परिवार के सदस्य को इस रोग के लक्षण नज़र आते, उस घर की चौखट पर बड़ा सा 'X' काटे का निशान लगा दिया जाता था। यह लोगों के लिए चेतावनी का सूचक था कि यह घर अलग कर दिया गया है - वहाँ प्रवेश निषेध है।

जानो और सुजैन बोराटकोवा के घर के दरवाज़े पर बड़ा सा 'X' काटे का निशान पुता था। एक सप्ताह से कम समय में इस युवा दंपत्ति ने, जिनके तीन बच्चे थे, अपने आप को निसंतान पाया। उनकी ज्येष्ठ पुत्री, जोकि पाँच वर्ष की थी, सबसे पहले गई। और जिस समय जानो एक शवपेटिका तैयार कर रहा था, उसके दो बेटे भी मरने पर थे।

जैसे ही इन दोनों बच्चों ने भी आखिरी सांस छोड़ी, सुज़ैना सुबक-सुबक कर रोने लगी। उसने आखिरी बार अपने दोनों बेटों का शव धोया और सावधानी से कपड़े में लपेटा और हाथ से बनी चीड़ की लकड़ी की शवपेटिका में रखा। उसने और उसके पति जानो ने इन शवपेटिकाओं को उठा कर गाड़ी में लादा और लेकर धीरे-धीरे उस दिसम्बर के महीने की काटने वाली सर्दी में शमशान भूमि की ओर चल दिये, रास्ते भर कई फुट बर्फ गिरी थी। वे एक के बाद एक 'X' काटे के चिन्ह लगे घरों के सामने से

गुज़र रहे थे, लेकिन सांत्वना और प्रोत्साहन देने का बल उनमें नहीं था। वे अपने ही दुख के बोझ तले दबे थे।

युवा दंपत्ति ने अपने बच्चों को ताज़ी खोदी हुई कब्र में दफनाया और प्रभु की प्रार्थना को बड़ी कठिनाई से बोलते हुए दफनाने की प्रक्रिया को पूरा किया। और वापस धीमें से गाड़ी पर चढ़े और वापस घर आए। वहाँ उनसे मिलने के लिए कोई नहीं था। उनसे मिलना बहुत खतरनाक था क्योंकि उनका घर संघरोधित कर दिया था। वह डरावना, काला छोटा सा मकबरा बना हुआ ता। छोटे ऊँची ऐड़ी के भूरे चमड़े के जूते कतार में लकड़ी के स्टोव के पास अभी भी रखे थे, जैसे उस समय में जब बच्चे आराम से अपने नरम बिस्तरों में होते थे। लेकिन अब वे बिस्तरे खाली थे, घर ठंडा पड़ा था, छाया गहरी और उदासीन।

जानो स्वयं बीमार था। 'मैं अगली क्रिसमस नहीं देख पाऊँगा,' उसने कहा, खांसते और मुश्किल से सांस लेते हुए। 'मुझे नहीं लगता मैं नए साल की शुरुआत भी देख पाऊँगा।' उसने शोरबे और रोटी को परे सरका दिया, क्योंकि रोग के कारण निगल पाना बहुत ही कठिन था। इस गले के रोग ने मानो उसकी गरदन में फाँसी की गाँठ लगा दी हो, न तो खाना और न ही पर्याप्त मात्रा में हवा उसके गले उतरती। सुजैना ने रात को जलाने के लिए लकड़ियाँ इक्कठी की, इस बात का निश्चय होते देख कि उसका पति मरने पर था। एक बार दोबारा बर्फ गिरनी आरंभ हो गई थी, उसने एक क्षण के लिए खिड़की के परे देखा। उसका विचार पवित्र बाइवल के इस पद पर गया - भजन संहिता (121:1) - 'मैं अपनी आंखे पर्वतों की ओर उठाऊंगा, मुझे सहायता कहां से मिलेगी, प्रभु से मेरी सहायता आयेगी?'

अचानक उसने किसी को आते देखा, उसने एक देहाती महिला को बर्फ में आते देखा, एक लाल और बैंगनी रंग की शाल द्वारा उसके झुके हुए कंधे ढके थे। उसके सिर पर रुमाल बंधा था और उसका लंहगा सूत और टाट के चटकदार रंगों से भरा दिख रहा था। एक हाथ में उसने एक परदर्शी तरलं पदार्थ को बोतल में पकड़ा हुआ था। वह घर के दरवाज़े पर पहुँची और खटखटाया।

सुजैना ने सावधानी से दरवाज़ा खोला, 'हमारे घर में महामारी है,' उसने कहा, 'और मेरा पति बुखार में पीड़ित है।' बूढ़ी औरत ने सिर हिलाया और इशारे से पूछा कि क्या वह अंदर आ सकती है। उसने उस जार को सामने किया। 'एक साफ सूती महीन कपड़ा ले,अपनी उंगली पर लपेट,' उसने कहा, 'और अपनी उंगली को इस शुद्ध मिट्टी के तेल (घासलेट) में डुबो और उससे अपने पति के गले के अंदर के भाग को साफ कर और फिर उसे एक छोटा चम्मच तेल निगलने को दे। यह उसे इस जानलेवा थूक को उल्टी करने में मदद करेगा। नहीं तो निश्चय ही इसका गला घुट जाऐगा। मैं तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के लिए प्रार्थना करूँगी।'

इस पर वह काली खाँसी का घरेलू इलाज छोड़ कर वहाँ से मुड़कर चली गई। सुजैना ने उसके दिये हुए निर्देश का पालन किया औऱ क्रिसमस की सुबह जानो ने वह जानलेवा बलगम उल्टी में निकाल दिया। उसका बुखार टूटा और सुज़ैना के मन में आशा की किरण फूटी। उस साल घर में क्रिसमस के पेड़ के नीचे कोई उपहार नहीं था। लेकिन वह बूढ़ी महिला और उसकी तेल की बोतल एक जीवन की भेंट थी। जानो समय पर चंगा हो गया। परमेश्वर ने उस दंपत्ति को और बच्चे दिये। 1920 में जानो और सुज़ैना ने अमेरिका देश में प्रवास किया - अपने आठ बच्चों के साथ, जिनमें दो जुड़वाँ जोड़े और एक बार में पैदा हुए तीन बच्चे थे। यह कहानी उस परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाई और याद रखी जा रही है। एक छोटी सी देहाती औरत, जो क्रिसमस की पहली शाम को जीवन की भेंट लेकर आई। यीशु भी उसी तरह हताश दुखी लोगों के लिए जीवन की भेंट लाए। वह यहूदी और गैर यहूदी के लिए आये। वह तुम्हारे और मेरे लिए आये।

- चुना हुआ।